IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 23, Issue 10, Ver. 1 (October. 2018) PP 85-87
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

प्राकृतिक सम्पदा का संरक्षण–आज की आवश्यकता

रेखा जौरवाल
व्याख्याता(इतिहास)
गैरी देवी राजकीय महिला महाविद्यालय अलवर, राजस्थान, 301001

मनुष्य अपने जीविकोपार्जन के लिये प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करता है। आदिम–मानव अपने पर्यावरण से प्राप्त वनस्पतियों एवं पशुओं पर निर्भर था। उस समय जनसंख्या का घनत्व कम था, मनुष्य की आवश्यकताएँ सीमित थीं तथा प्रौद्योगिकी का स्तर नीचे था। अतः उस समय संरक्षण की समस्या नहीं थी। कालान्तर में मनुष्य ने संसाधनों के दोहन की प्रौद्योगिकी में विकास किया। वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास द्वारा मनुष्य जीविकोपार्जी संसाधनों के अतिरिक्त, उत्पादन के संसाधनों का भी दोहन करने लगा। आज आधुनिक तकनीकी की सहायता से संसाधनों का दोहन और भी बड़े पैमाने पर होने लगा है। जनसंख्या की निरंतर वृद्धि के कारण संसाधनों की मांग बढ़ रही है साथ ही प्रौद्योगिकी के विकास द्वारा इन्हें उपभोग करने की मनुष्य की क्षमता भी बढ़ी है अतः इस होड़ ने यह आशंका उत्पन्न कर दी है कि कहीं ये संसाधन शीघ्र समाप्त न हो जाएँ और पूरी मानवता के जीवन पर ही प्रश्नचिन्ह न लग जाए।

प्राकृतिक आपदा बनाम मानवीय प्रबंधन इस बात को साबित करती है कि हम कहीं न कहीं होने वाली प्राकृतिक आपदाओं से चिन्तित हैं। अगर हम प्राकृतिक आपदाओं को लेकर चिन्तित हैं तो हमें यह होने वाली आपदाओं के कारण जानने होंगे और कारण है हम और हमारा समाज और दिन व दिन बढ़ती अमीर होने की लालसा।

आपदा जैसा कि नाम स्पष्ट होता है मुसीबत, संकट, विपत्ति, आपत्ति, कष्ट, कठिनाई और भी कई नाम है इसके प्राकृतिक आपदा, अर्थात प्रकृति के कारण प्राप्त होने वाला मुसीबत, कष्ट, संकट जोकि मानव जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। आपदा घटने के उपरान्त सर्वत्र विनाश, दुर्दशा तथा संत्रास का दृश्य उत्पन्न हो जाता है। हर विवर्तनिक घटना के कारण भूकम्प तथा ज्वालामुखी का उत्पन्न होना. दीर्घ अवधि तक सूखे की स्थिति उत्पन्न होना, बाढ़, भूकम्प, वायुमण्डलीय तूफान, हरिकेन, टारनेडो, टाइफून आदि। इससे मानव जीवन पर अतिरिक्त प्रभाव भी जैसे भूकम्प के कारण नदी का मार्ग अवरुद्ध होकर बाढ़ की स्थिति उत्पन्न होना, सन् 1950 ई. में असम में भूकम्प के कारण ब्रह्मपुत्र नदी में बाढ़ आयी थी तटवर्ती तथा चक्रवर्तीय तूफानों का फैलना।

प्राकृतिक प्रकोप उन चरम घटनाओं को कहते हैं जो प्राकृतिक परिस्थितिक तंत्र के जैविकी और अजैविकी संघटकों की सहन सीमा पर प्रभाव डालते हैं और प्रलयंकारी स्थिति उत्पन्न होती है, अपूर्णनीय क्षति होती है। डा० डी० के० गुप्ता ''आपदा जो विध्वंसकारी घटना अचानक घटती है, अत्याधिक भौतिक क्षति होती है, जानमाल की हानि के साथ संकट की स्थिति उत्पन्न होती है।''

ज्यादातर लोग आपदा व प्रकोप को एक ही समझते हैं लेकिन दोनो में अन्तर है। प्रकोप संकट किसी भौतिक घटना से होने वाला संकट या खतरा है जोकि विशिष्ट स्थान पर होता है। जिससे एक निश्चित नुकसान पहुँचाने की क्षमता होती है। (ज्वालामुखी उद्‌गार) लेकिन आपदा घने बसे हुये क्षेत्र में भौतिक व मानवीय सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाना है। 28 जनवरी 2001 को गुजरात में पहले लोग दैनिक क्रियाकलाप और कार्य करने में मग्न थे लेकिन बाद में लाशों को उठाने में लग गये आपदा की परिस्थिति उत्पन्न होने के कारण।

प्राकृतिक आपदाओं के कारण प्राकृतिक और मानवीकृत आपदाओं में अन्तर करना कठिन कार्य है। क्योंकि अनेक बार मानव के कारण ही प्राकृतिक आपदाएँ होती हैं जैसे ओजोन परत का क्षय होना, जिसके कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है और हिम राशि पिघल रही है। परिणामस्वरूप समुद्र तल में परिवर्तन हो रहा है, 1984 में ड्राप्सी महामारी, तीव्र वनोन्मूलन से वन्य जीवों की समाप्ति, जल संकट,विभिन्न प्रकार के प्रदूषण उत्पन्न हुए।

पृथ्वी द्वारा आपदापन्न घटनाओ में भूकम्प, ज्वालामुखी, वृहतस्तर पर उत्पन्न भूस्खलन तथा हिम स्खलन, यह आपदाएँ पृथ्वी के अन्तर्जात वालों द्वारा आन्तरिक तापीय दशाओं के उपरान्त उत्पन्न होती हैं। इनसे अधिकांश प्राकृतिक आपदाओं की उत्पत्ति महाद्वीपीय एवं महासागरीय प्लेटों के संचालन के कारण यथा 26 जनवरी सन् 2001 ई. को गुजरात का भूकम्प अरेवियन प्लेट तथा इण्डियन प्लेट के संचालन के उपरान्त हुआ। प्लेटो का संचालन पृथ्वी के आन्तरिक भागों में तापीय दशाओं से संवहनीय तरंगों के परिणामस्वरूप होता है। भूकम्प, ज्वालामुखी, हिम स्खलन, भूस्खलन, चक्रवात, बा उत्तरी ऑस्ट्रेलिया में डार्विन नगर में सन् 1974 में ट्रेसी चक्रवात के कारण 49 व्यक्ति मारे गये, टाइफून में सन् 1881 में 3 लाख लोग मारे गये, हरिकेन उत्तरी अटलांटिक महासागर विशेषतः कैरिबयन साबर एवं दक्षिणी संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रभावशाली, टाइफून उत्तरी प्रशान्त महासागर विशेषतः चीन सागर, चीन के पूर्वी तथा दक्षिणी तटीय सागर, जापान

तथा फिलीपीन्स में, बाग्लादेश, भारत का पूर्वीतट एवं अरब सागर में चक्रवात तथा आस्ट्रेलिया में विलीविली प्रभावशाली है।

यू०एस०ए० के अल्बर्टा प्रान्त स्थिति टर्टल पर्वत में 1903 में आये भूस्खलन से 3 मिलियन क्यूबिक गज आकार में चूना पत्थर का जमाव हुआ जिसमें फेक कस्बा मलबा में दबा और 70 लोग मारे गये। इस प्रकार 1959 में मोण्टाना के परिणामस्वरूप 27 लोग मारे गये और एक झील का निर्माण हुआ। 1911 में पामीर क्षेत्र में 7–8 टन का प्रस्तर प्रखण्ड नदी में जा पहुँचा और सुरेज झील का निर्माण हुआ। यह 80 किमी0 लम्बी है। नैनीताल में 1880 में 150 लोग मारे गये । कहीं जल के अभाव में भीषण सूखा हो कहीं इतना जल की बाढ़ जैसे पश्चिमी भारत में भीषण सूखा और पूर्वीतर भारत में बाढ़ की स्थिति। गुजरात के भूकम्प के कारण कि राजस्थान में विभिन्न भागों को नलकूप लगाकर दोहन किया गया।

पर्यावरण की उपेक्षा समस्त प्राणियों के लिये संकट व विनाश का कारण बनती जा रही है। कृषि में कीटनाशकों के प्रयोग से कीटो के साथ–साथ अन्य जीव जन्तु भी नष्ट होते थे। मष्दाजल के साथ जलाषयों में पहुँचकर समस्त जीवों को प्रभावित करते हैं। मछलियों को भोजन के रूप में प्रयुक्त होने पर मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसी तरह जलवायू तथा मिट्टी के द्वारा परिस्थितिकी को प्रभावित करता है। किसी भी चीज की न्यूनता या अधिकता विनाश का कारण बन सकती है। वनों का अत्याधिक कटान, सूखा व बाढ़ व मरूस्थलीयकरण की समस्या को बढ़ायेगा।

प्राकृतिक व ऊर्जा संसाधनों का जीवन पर पढ रहे प्रभाव को इस तरह समझा जा सकता है :–

1. औद्योगिक विकास में तेजी :– मुख्यतया औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों का असीमित दोहन किया गया बल्कि जल, वायु, व मृदा को प्रदूषित किया गया जिसके कारण 2 से 3 दशकों में सम्पूर्ण विश्व में करीब 2 अरब हेक्टेयर क्षेत्र से मिट्टी की ऊपरी उपजाऊ परत नष्ट हो गयी। यह क्षेत्रफल समस्त कृषि योग्य भूमि से काफी अधिक है। बढ़ते उपयोग के कारण 10 अरब टन विभिन्न अयस्क, ईंधन व इमारती पत्थर खनन करके निकाले जाते हैं, 5 करोड़ टन से अधिक उत्पादित पदार्थ उत्पन्न किये जाते हैं लगभग 50 करोड़ टन खनिज उर्वरकों का उपयोग होता है। 40 लाख टन रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग होता है।

समस्त संसार का औद्योगिक संयंत्र प्रतिशत 30 अरब घन मीटर प्रदूषित जल 25 करोड़ टन, 7. करोड़ टन जहरीली गैसों का उत्सर्जन व निष्कासित करती है। आकड़ों से भविष्य आपको अपने आप दिख जायेगा कुछ बताना अब जरूरी नहीं है।

2. तेजी से बढ़ती जनसंख्या भी इसका कारण है क्योंकि उपयोग और निष्कासन भी बढ़ रहा है।

3. तकनीकीकरण भी इसका कारण है।

4. मरुस्थलीयकरण की प्रक्रिया के दौरान उपजाऊ भूमि उपयोगी नहीं रहती है। नदियों का जल स्तर गिरता जाने के कारण वनस्पति कम पैदा हो रही है।

5. असीमित खनन का उपयोग होना जिसके कारण सीमावर्ती पर्यावरणीय दशाओं पर पड़ता है।

6. देश की विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत नदी घाटी परियोजनाओं का कार्य प्रारंभ किया गया लेकिन इस नदी घाटी परियोजनाओं के भूगार्भिक सामाजिक सांस्कृतिक वनस्पति, वन्य जीव तथा अन्य परिस्थितिकी पक्ष का विस्तृत अध्ययन नहीं किया गया।

7. मृदा से हम बढ़ती जरूरतों, तेजी से बढ़ती जनसंख्या, प्राकृतिक संसाधनों का अनियोजित ढंग से उपयोग, शहरीकरण, वनों का विनाश, नई कृषि भूमि योग्य का निर्माण, रासायनिक खादों एवं मृदा कीटनाशकों के अधिकाधिक उपयोग के कारण मृदा का स्वाभाविक स्वरूप नष्ट हो गया है और हम 5 घण्टो में मृदा का अपरदन कर देते हैं जबकि 500 वर्ष में वहीं स्वाभाविक रूप वापिस आता है।

8. ऊर्जा संकट : कोयला, तेल, लकडी का उपयोग जिससे वनों का उन्मूलन हो रहा है। प्रदूषण के मानविकी स्त्रोत में औद्योगिकीकरण श्राव, घरेलू वाहि श्राव, बाहित मल, कृषि बहिश्राव तेलीय श्रोत, तापीय श्रोत, रेडियोधर्मी अपशिष्ट दहन क्रिया, नगर पालिका अपशिष्ट, खनन अपशिष्ट, परिवहन के साधन, मनोरंजन के साधन, सामाजिक क्रिया कलाप आदि।

अभी तक ऊपर बताया गया आपदाओं और प्रदूषण पर प्रभाव डालता है यह तो मात्र बानगी पर है। इसमें बताये गये शब्द कुछ ही प्राकृतिक आपदाओं के बारे में बतलाये गये शब्द कुछ ही प्राकृतिक आपदाओं के बारे में बतलातें हैं। अभी तक इतनी आपदा आ चुकी है कि अगर सभी बतायें तोशायद में लिख न पाऊ और पढ़ने वाला पढ़ न पाये क्योंकि इतनी त्रासदी हो चुकी है कि हम उन त्रासदी को दुबारा नहीं महसूस कर सकते है। हमें जागना होगा और अगर हम जाग गये तो कुछ हद तक काबू भी पा सकेंगें।

अब आगे आप इसके लिये चलने वाले प्रोग्रामों के बारे में सूक्ष्म जानकारी – आपदा रोकथाम में सभी कार्य शामिल है जो प्राकृतिक प्रकोप से होने वाली धन, जन की हानि को खत्म कर सकेगा कम कर सके जैसे 29 अक्टूबर 1999 को उड़ीसा में आये तूफान की भविष्यवाणी वायरलेस व आकाशवाणी से 25 अक्टूबर को ही दे दी गयी थी।

आपदा के प्रभाव को कम करने में उन सभी उपायों को सम्मिलित किया जाता है जो लोगों को आपदा से यथासंभव बचाने में मदद मिलती है। प्रभाव कम करने में आधारभूत नीतियों में भूमि को नियंत्रित करना, भवन निर्माण संबंधी उपर्युक्त संहिता एवं भवनों के वास्तुशिल्प संबंधी डिजाइन तैयार करना तथा चट्टानों को गिरने से रोकने के लिये अवरोधक लगाना आदि। 4000 भारतीय निगरानी केन्द्रों द्वारा मौसम विभाग, सूखा, वर्षा, चक्रवात तथा फसलों के बारे में अनुमान, अंतरिक्ष विभाग इनसे टी०बी० के द्वारा सूखा बाढ़ तथा बदलते मौसम पर निगरानी रखता है। आपदा पर अध्ययन के लिये भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, इग्नू, यशवंत राय चौहान विकास प्रशासन अकादमी, रुड़की विश्वविद्यालय, इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ इकोलोजी एण्ड एन्वायमेन्ट आदि।

पूरा विश्व इस प्राकृतिक आपदा से निपटने के लिये संयुक्त कार्यक्रम चला रहा है। डब्लूएचओ, यूनीसेफ आदि कई अरब डालर खर्च करके पूरे विश्व को बचाने की मुहिम में लगी हुयी है। अतः ओजोन क्षरण, अम्लवर्षा आदि से समस्त विश्व को खतरा है। पूरा विश्व चाहता है कि इसको कम किया जा सके लेकिन क्या हम इसको कम कर रहे है या इसको बढ़ा रहे रोजाना हो रहे आणविक परीक्षण, औद्योगिक उत्पादन में निकलने वाले बहुत से अपशिष्ट पदार्थ एवं गैस जोकि मानव जीवन को खतरे में डाल रही है अतः इस मुहिम में सबसे बड़ी बात है कि हम कितना सहयोग दे रहे हैं। पालीथीन का प्रयोग हम जहाँ भी चाहते हैं फेंक देते हैं लेकिन कभी न सहने और गलने वाली पालिथीन एवं मोबाइल का निकलने वाला ई–कचरा को मानव कम कैसे करें अगर मानव अभी भी इसके प्रति जागरूक नहीं होता हैं तो समझिये कि हम व हमारी सृष्टि विनाश की ओर है और अगर इसी तरह प्राकृतिक चीजों का दोहन होता रहा तो 2012 न सही लेकिन आगे आने वाले कई वर्षों बाद ऐसी प्राकृतिक आपदा आयेगी कि उस आपदा से की जाने वाली सारी भविष्यवाणियाँ असत्य करते हुये पृथ्वी को महाविनाश की ओर ले जायेगा फैसला आपको लेना है विनाश करना है कि बचाना है। जागो और आगे बढ़ो इस विश्व को खतरे से अभी भी बचाया जा सकता है। बस जागरूक होकर इस कार्य में सहयोग देने की जरूरत है।

सन्दर्भ सूची :–

1ण संरक्षण इंटरनेशनल, 2011 क्रिस्टल ड्राइव, सूट 500, आर्लिंगटन, वीए, यूएसए

2ण मेडेलीन बॉटलर, जेनेट एडमंड और विल आर टर्नर

3ण पारिस्थितिकी और विकासवादी जीव विज्ञान विभाग, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, लॉस एंजिल्स, लॉस एंजिल्स, सीए, यूएसए

4ण सामंथा चेंग एक्सेटर विश्वविद्यालय, पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए यूरोपीय केंद्र, ट्रुरो, यूनाइटेड किंगडम

5ण रूथ गारसाइड प्रकृति संरक्षण, विश्वव्यापी कार्यालय, आर्लिंगटन, वीए, यूएसए

6ण सुपिन वोंगबसराकुम पर्यावरण और विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थान, 80–86 ग्रेज़ इन रोड, लंदन, ॅब1ग 8छभ, यूके डिलिस रो ।

7ण प्राचीन ग्रंथों में पर्यावरण संरक्षण , 2018